कृषि कुंभ
हिंदी मासिक पत्रिका

खण्ड 03 भाग 11, (अप्रैल, 2024)
पृष्ठ संख्या 47–56

# भारत में अनुबंध खेती की स्थिति और संभावनाएँ

**सौम्या शुभश्री महापात्र**
आईसीएआर–सेंट्रल इंस्टीट्यूट ऑफ पोस्ट–हार्वेस्ट इंजीनियरिंग एंड टेक्नोलॉजी, लुधियाना, पंजाब–141004, भारत।
**Email Id:** – soumyaasubhashree96@gmail.com

## परिचय

अनुबंध खेती को खरीदार और किसानों के बीच एक समझौते के अनुसार किए गए कृषि उत्पादन के रूप में परिभाषित किया जा सकता है, जो कृषि उत्पाद या उत्पादों के उत्पादन और विपणन के लिए शर्तों को स्थापित करता है। आमतौर पर, किसान एक विशिष्ट कृषि उत्पाद की पूर्व–सहमति मात्रा प्रदान करने के लिए सहमत होता है। इन्हें क्रेता के गुणवत्ता मानकों को पूरा करना चाहिए और क्रेता द्वारा निर्धारित समय पर आपूर्ति की जानी चाहिए। बदले में, खरीदार उत्पाद खरीदने और कुछ मामलों में उत्पादन का समर्थन करने के लिए प्रतिबद्ध है, उदाहरण के लिए, कृषि आदानों की आपूर्ति, भूमि की तैयारी और तकनीकी सलाह का प्रावधान।

निम्नलिखित तीन क्षेत्रों में प्रावधानों की गहराई और जटिलता के अनुसार संविदात्मक व्यवस्था की तीव्रता भिन्न होती है:

**बाजार का प्रावधानः** उत्पादक और खरीदार फसल या पशुधन उत्पाद की भविष्य की बिक्री और खरीद के लिए नियमों और शर्तों से सहमत हैं।

**संसाधन का प्रावधानः** विपणन व्यवस्था के संयोजन में खरीदार चयनित इनपुट, अवसरों को तैयार करने की तकनीक और तकनीकी सलाह देने के लिए सहमत होता है।

**प्रबंधन विनिर्देशः** उत्पादक अनुशंसित उत्पादन विधियों, कटाई विनिर्देशों का पालन करने के लिए सहमत है।

## भारत में अनुबंध खेती की उत्पत्ति

भारत में, उन्नीसवीं शताब्दी में कॉन्ट्रैक्ट फार्मिंग का पता लगाया जा सकता है, जब कॉटन, इंडिगो और तंबाकू जैसी व्यावसायिक फसलें अनुबंध के तहत उगाई जाती थीं। बीसवीं शताब्दी में, अनुबंध ज्यादातर गन्ना और बीज उत्पादन के लिए थे। भारत में, टमाटर और मिर्च के उत्पादन के लिए 1990 के दशक की शुरुआत में पेप्सीको द्वारा अनुबंध खेती शुरू की गई थी। इक्कीसवीं सदी के मोड़ पर, कई कृषि फसलों जैसे टमाटर, आलू, काली मिर्च, ककड़ी, प्याज, बेबी कॉर्न, गेहूं,

बासमती चावल और औषधीय पौधों के लिए अनुबंध मौजूद था। पेप्सिको, हिंदुस्तान लीवर, डाबर, महिंद्रा, विम्को जैसे बड़े निगमों ने कई फसलों के लिए अनुबंध खेती का इस्तेमाल किया, लेकिन क्षमता की तुलना में यह कवरेज अभी तक कम है।

## अनुबंध कृषि मार्ग

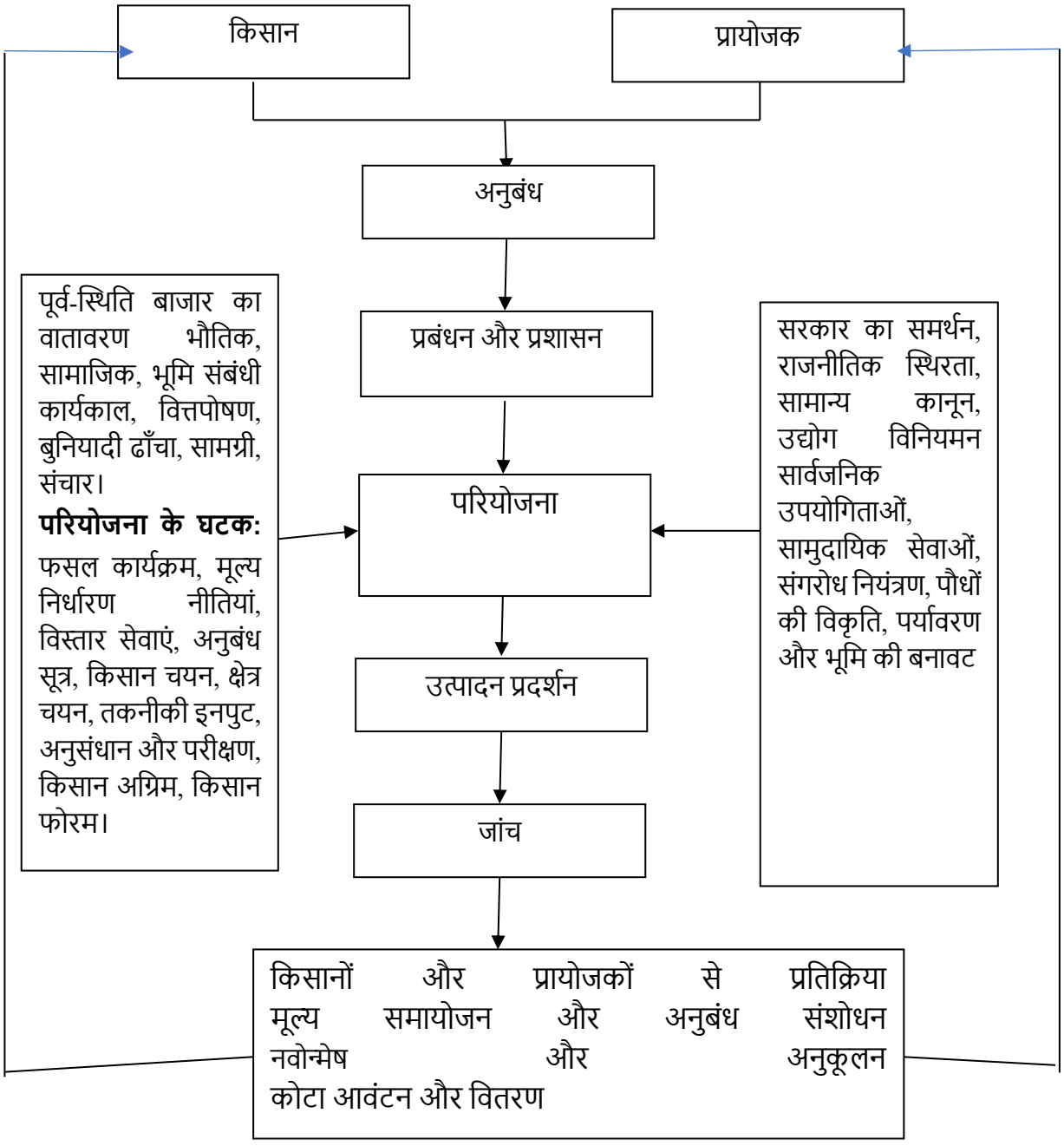

## अनुबंध खेती के प्रकार

प्रत्येक प्रकार की प्रासंगिकता और महत्व उत्पाद से उत्पाद और समय के साथ भिन्न होता है। आंशिक और कुल अनुबंध उत्पादन अनुबंधों के प्रकार हैं।

**खरीद अनुबंध:**
इसे विपणन अनुबंध के रूप में जाना जाता है। यह एक प्रकार की अनुबंध खेती है जिसमें केवल बिक्री और खरीद की स्थिति निर्दिष्ट की जाती है।

**आंशिक अनुबंध:**
इस प्रकार के अनुबंधों में केवल अनुबंधित फर्म द्वारा कुछ इनपुट्स की आपूर्ति की जाती है और उत्पादन पूर्व-सहमत कीमतों पर खरीदा जाता है।

**कुल अनुबंध:**
इसमें कांट्रेक्ट करने वाली फ़र्म होती है जो फ़ार्म की सभी इनपुट्स की आपूर्ति और प्रबंधन करती है। किसान भूमि और श्रम का आपूर्तिकर्ता बन जाता है।

## अनुबंध कृषि मॉडल

क) केंद्रीकृत मॉडल

ख) न्यूक्लियस एस्टेट मॉडल

ग) मल्टीपार्टाइट मॉडल

घ) मध्यस्थ मॉडल

ङ) अनौपचारिक मॉडल

### क) केंद्रीकृत मॉडलः

यह सबसे आम अनुबंध कृषि मॉडल है। इस मॉडल में खरीदारों की भागीदारी न्यूनतम इनपुट प्रावधान (जैसे विशिष्ट किस्मों) से ले कर अधिकांश उत्पादन पहलुओं के नियंत्रण तक (जैसे भूमि की तैयारी से कटाई तक) हो सकती है ।

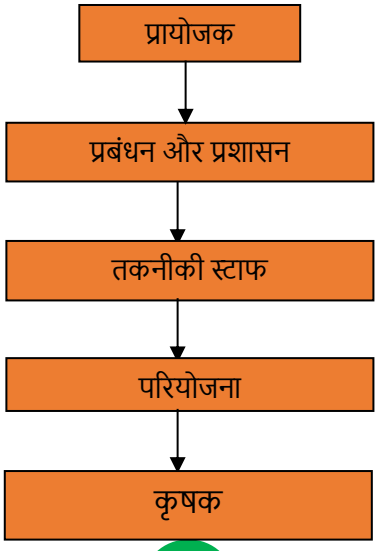

**विशेष सुविधाएँ:**

- खरीदार किसानों से उत्पाद खरीदते हैं और बड़ी संख्या में छोटे, मध्यम या बड़े किसानों को सेवाएं प्रदान करते हैं।
- किसानों और ठेकेदार के बीच संबंध /समन्वय सख्ती से व्यवस्थित रहता रहता है।
- सीजन की शुरुआत में मात्रा, गुण और वितरण की स्थिति निर्धारित की जाती है।
- उत्पादन और कटाई की प्रक्रिया और गुणों को पूरी तरह से नियंत्रित किया जाता है, कभी–कभी सीधे खरीदार के कर्मचारियों द्वारा कार्यान्वित किया जाता है।
- विशिष्ट उत्पादः प्रसंस्करण के लिए उत्पादय जैसे गन्ना, तंबाकू, चाय, कॉफी, कपास, सब्जियां, डेयरी, मुर्गी पालन, बागान–सस्य, आदि।

### ख) न्यूक्लियस एस्टेट मॉडल

खरीदार खुद के सम्पदा और अनुबंधित किसानों से उत्पाद खरीदता है। इस मॉडल में खरीदार द्वारा भूमि, मशीनों, कर्मचारियों और प्रबंधन में महत्वपूर्ण निवेश शामिल होता हैं।

**विशेष सुविधाएँ:**

- यह मॉडल प्रसंस्करण क्षमताओं के कुशल उपयोग को सुनिश्चित करने और खेत की बिक्री दायित्वों को पूरा करने की गारंटी देता है।
- कुछ मामलों में, इस मॉडल को अनुसंधान, प्रजनन और प्रदर्शन उद्देश्यों के लिए उपयोग किया जाता है।
- यह मॉडल अतीत में अक्सर राज्य राज्य अधिकृत खेतों के लिए उपयोग किया जाता था जो पूर्व श्रमिकों को भूमि आवंटित करते थे। इसका उपयोग निजी क्षेत्रों द्वारा भी किया जाता है।

**विशिष्ट उत्पादः**

बारहमासी पौधा

### ग) मल्टीपार्टाइट मॉडल

यह मॉडल केंद्रीयकृत या न्यूक्लियस एस्टेट मॉडल से विकसित हो सकता है। इसमें निजी संगठनों और कभी–कभी वित्तीय संस्थानों के साथ–साथ कई सरकारी संस्थाएं शामिल हैं।

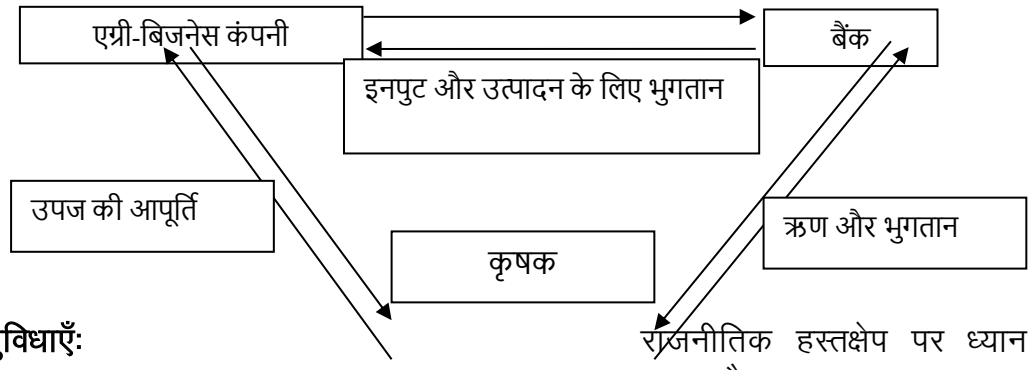


**विशेष सुविधाएँ:**

- यह मॉडल प्रसंस्करण के लिए घरेलू /विदेशी निवेशकों के साथ सामुदायिक कंपनियों के संयुक्त उपक्रम के रूप में हो सकता है। ऊर्ध्वाधर समन्वय खेत की प्राथमिकता पर निर्भर करता है। संभावित राजनीतिक हस्तक्षेप पर ध्यान देना पड़ता है।
- यह मॉडल तीसरे पक्ष के सेवा प्रदाताओं (जैसे एक्सटेंशन, प्रशिक्षण, क्रेडिट, इनपुट, लॉजिस्टिक्स) के साथ अनुबंध द्वारा पूरक कृषि व्यवस्था के रूप में भी हो सकता है।
- अलग–अलग संगठन (जैसे सहकारी संगठन) किसानों को संगठित कर

सकते हैं और विभिन्न सेवाएं (जैसे क्रेडिट, विस्तार, विपणन, प्रसंस्करण, आदि) प्रदान कर सकते हैं।

- इस मॉडल में उत्पादकों के लिए इक्विटी शेयर योजनाएं शामिल हो सकती हैं ।

### घ) मध्यस्थ मॉडल

खरीदार एक मध्यस्थ (कलेक्टर, एग्रीगेटर या किसान संगठन) को उप–निर्माण करता है जो किसानों को औपचारिक या अनौपचारिक रूप से अनुबंधित करता है (यह केंद्रीकृत/ अनौपचारिक मॉडल का एक संयोजन है)।

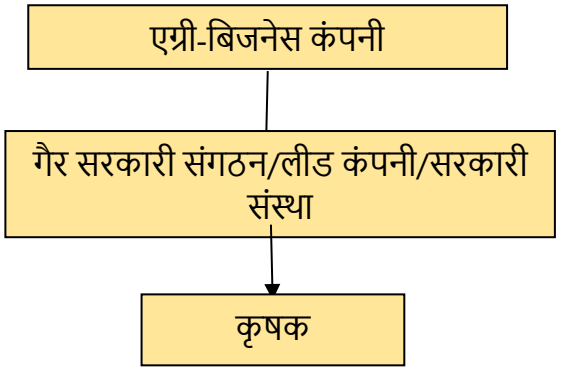


### विशेष सुविधाएँ:

- मध्यस्थ विभिन्न सेवाएं प्रदान करता है (सेवा शुल्क के लिए खरीदारों द्वारा प्रदान की जाती है) और फसल खरीदता है।
- यदि नियंत्रण तंत्र अच्छी तरह से डिजाइन किए गए हैं और प्रोत्साहन–संरचनाएं पर्याप्त हैं, तो यह मॉडल ठीक से काम कर सकता है।
- यह मॉडल ऊर्ध्वाधर समन्वय के लिए और किसानों को प्रोत्साहन प्रदान करने के लिए नुकसान का सामना कर सकता है (खरीदार उत्पादन प्रक्रियाओं का नियंत्रण, गुणवत्ता आश्वासन और आपूर्ति की नियमितता खो सकते हैंय किसानों को प्रौद्योगिकी हस्तांतरण से कम लाभ प्राप्त कर सकते हैं मूल्य विरूपण और कम आय के लिए जोखिम भी हो सकते है।

### ङ) अनौपचारिक मॉडल

यह सभी अनुबंध कृषि मॉडल का सबसे क्षणिक और जोखिम भरा है, जिसमें खरीदार और किसान दोनों के जोखिम की संभावना है। अनुबंध साझेदारों की निर्भरता अवसरवादी व्यवहार के जोखिम को कम कर सकती है।

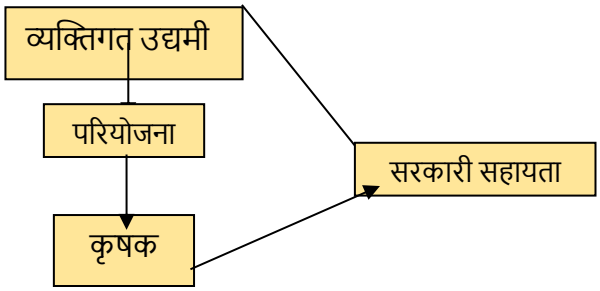


### विशेष सुविधाएँ:

- छोटे खेतों में छोटे धारकों के साथ अनौपचारिक मौसमी उत्पादन अनुबंध शामिल होता हैं।
- इसकी सफलता बाहरी विस्तार सेवाओं की उपलब्धता और गुणवत्ता पर निर्भर करती है।
- सेवाएं मूल इनपुट और क्रेडिट के वितरण तक सीमित हैंय सलाह आमतौर पर ग्रेडिंग और गुणवत्ता नियंत्रण तक सीमित होती है।
- विशिष्ट उत्पादः न्यूनतम प्रसंस्करण/ पैकेजिंग के लिए आवश्यक उत्पादय जैसे स्थानीय बाजारों में उपलब्ध ताजे फल और सब्जियां।

### अनुबंध खेती क्यों करें

- अनुबंध खेती में, निजी क्षेत्र शामिल हैं जो उत्पादों की खरीद कर रहे हैं और संसाधन प्रदान कर रहे हैं। जो केंद्रीय और राज्य स्तर की खरीद प्रणाली पर बोझ को कम करता है। इस प्रकार, कृषि में निजी क्षेत्र के निवेश में वृद्धि होता है।

- अनुबंध खेती उत्पादन अभिविन्यास को बदलने में मदद करती है और उन्हें अधिक बाजार उन्मुख बनाती है। किसान उत्पादन के लिए अधिक बाजार विशिष्ट फसलों का चयन करते हैं और अधिक लाभ प्राप्त करते हैं। इस प्रकार, यह किसानों के लिए आय के एक स्थिर प्रवाह को बनाए रखने में मदद करता है।
- अनुबंध खेती में फॉरवर्ड लिंकेज और बैकवर्ड लिंकेज दोनों शामिल हैं। यह कृषि उत्पादों के प्रसंस्करण और मूल्य संवर्धन को बढ़ावा देता है जो न केवल बाजारों में इसे अधिक वांछनीय बनाता है बल्कि नुकसान को कम करने में भी मदद करता है।
- स्थानीय रूप से उपलब्ध संसाधनों और विशेषज्ञता के संयोजन से अनुबंध खेती ग्रामीण समुदायों के लिए लाभकारी रोजगार उत्पन्न करती है, विशेष रूप से भूमिहीन कृषि श्रम के लिए। इस प्रकार यह ग्रामीण आत्मनिर्भरता सुनिश्चित करता है। ग्रामीण जनता को दिया जाने वाला लाभकारी रोजगार, गाँवों से शहरी क्षेत्रों में उनके प्रवास को कम करता है।

## अनुबंध खेती के फायदे

### क) किसानों के लिए

- मूल्य/उत्पादन के जोखिम को कम करता है।
- किसानों को कीमत सुनिश्चित करता है क्योंकि बाजार आश्वस्त होते हैं।
- किसानों के बीच उत्पादों की गुणवत्ता चेतना को बढ़ाता है।
- बेहतर गुणवत्ता वाले बीज और कीटनाशकों के कारण उच्च उत्पादन सुनिश्चित करता है।
- विपणन लागत को कम करता है।
- यह किसानों को वित्तीय सहायता सुनिश्चित करता है।
- यह लगभग मुफ्त में कुशल और समय पर तकनीकी मार्गदर्शन भी सुनिश्चित करता है।

### ख) प्रसंस्करण कंपनी को लाभ

- सही समय पर और कम लागत पर गुणवत्तापूर्ण कृषि उपज की आपूर्ति सुनिश्चित करता है।
- कृषि गतिविधियों में प्रत्यक्ष निजी निवेश को बढ़ावा देता है।
- यह सुनिश्चित करता है कि निर्यात के लिए आवश्यकता के अनुसार विषाक्तता का स्तर कम हो।

### ग) व्यापारियों को लाभ

- कच्चे माल का निर्बाध और नियमित प्रवाह।
- बाजार मूल्य निर्धारण में उतार–चढ़ाव से सुरक्षा।
- दीर्घकालीन नियोजन संभव बनाया।
- अवधारणा को अन्य फसलों तक बढ़ाया जा सकता है, दीर्घकालिक प्रतिबद्धता का निर्माण करता है।

### अनुबंधित खेती (निर्दिष्ट उत्पाद) के साथ संबद्ध कंपनियां

| उत्पाद | संबधित कंपनियां |
|---|---|
| **मुर्गी पालन** | कोयम्बटूर हैचरी (ब्रॉयलर के लिए) |
| **लकड़ी (pulpwood)** | ITC / WIMCO / JK पेपर्स (एपी, उड़ीसा, पंजाब और यूपी) |
| **कार्बनिक रंजक (Organic dyes)** | कोयम्बटूर में मैरीगोल्ड किसान और निष्कर्षण इकाई |
| **डेयरी प्रसंस्करण (Dairy Processing)** | चितले (पुणे) और महाराष्ट्र और गुजरात के छोटे किसान {Chitale (Pune)} |
| **टमाटर का गूदा** | टमाटर उगाने के लिए पेप्सी कंपनी (पंजाब और राजस्थान) |

| | |
|---|---|
| **विदेशी सब्जियां** | Trikaya Foods / VST (महाराष्ट्र और आंध्र प्रदेश) |
| **मशरूम** | NAFED और सोनीपत के किसान (हरियाणा) |
| **खीरा** | बैंगलोर में किसानों के साथ निर्यातक |
| **खाद्य तेल** | आईटीओ एग्रो-टेक और सूरजमुखी की खेती करने वाले (आंध्र प्रदेश और कर्नाटक) |

## उत्पाद संबधित कंपनियां

- मुर्गी पालन कोयम्बटूर हैचरी (ब्रॉयलर के लिए)
- लकड़ी (चनसचूववक) ITC / WIMCO / JK पेपर्स (एपी, उड़ीसा, पंजाब और यूपी)
- कार्बनिक रंजक (Organic dyes) कोयम्बटूर में मैरीगोल्ड किसान और निष्कर्षण इकाई
- डेयरी प्रसंस्करण चितले (पुणे) और महाराष्ट्र और गुजरात के छोटे किसान {Chitale/Pune)}
- टमाटर का गूदा टमाटर उगाने के लिए पेप्सी कंपनी (पंजाब और राजस्थान)
- विदेशी सब्जियांज्तपांलं Food/VST (महाराष्ट्र और आंध्र प्रदेश)
- मशरूम NAFED और सोनीपत के किसान (हरियाणा)
- खीरा बैंगलोर में किसानों के साथ निर्यातक
- खाद्य तेल आईटीओ एग्रो–टेक और सूरजमुखी की खेती करने वाले (आंध्र प्रदेश और कर्नाटक)

## अनुबंध खेती के साथ जुड़े अन्य क्षेत्र

- मकई की खेती
- सॉस और केचप के टमाटर का प्रसंस्करण
- मिर्च पेस्ट के निर्माण के लिए मिर्च
- लहसुन और प्याज पेस्ट, पाउडर और निर्जलित उत्पादों के निर्माण के लिए।
- केले की विशेष किस्में
- चिप्स और वेफर्स बनाने के लिए आलू
- भालुओं के बनाने के लिए जौ
- प्याज और मंदारिन संतरे
- ड्यूरम गेहूं /बासमती चावल/ औषधीय पौधे / पुदीना/ मूंगफली/ फूल

कॉन्ट्रैक्ट फार्मिंग/मार्केटिंग के लिए बहुत गुंजाइश है क्योंकि बढ़ती आय के साथ, उपभोक्ता अधिक स्वास्थ्य और गुणवत्ता चेतना बन रहे हैं और ब्रांडेड उत्पादों की तलाश कर रहे हैं।

## अनुबंध खेती में मूल्य निर्धारण के तरीके

क) मूल्य निर्धारण किसानों और कंपनी के बीच बातचीत द्वारा किया जाता है। किसान एक सुनिश्चित मूल्य के साथ उत्पादन प्रक्रिया में प्रवेश करते हैं। नियम और शर्तें अनौपचारिक रूप से तय की जाती हैं। दोनों पक्षों से अनुबंध के उल्लंघन की

संभावना हो सकती है। इसे एक शोषक मॉडल माना जाता है।

ख) मूल्य निर्धारण एक सरकारी एजेंसी द्वारा दोनों पक्षों के परामर्श से किया जाता है। किसी भी पक्ष को अनुबंध के उल्लंघन की उम्मीद नहीं रहता है। अनुबंध सरकारी एजेंसी द्वारा लागू किया जाता है।

ग)किसान और कंपनी दोनों ही मूल्य का एक–दूसरे से निपटारा करते हैं, लेकिन कीमत तय होने के बाद, इसे राज्य सरकार के प्रवर्तन अधिकारी को सौंप दिया जाता है। प्रवर्तन अधिकारी मध्यस्थों को भागीदारों के बीच विवादों को निपटाने के लिए करते हैं, (तमिलनाडु में संचालित)।

## भारत में अनुबंध खेती के लिए प्रोत्साहन

- भारत में कॉन्ट्रैक्ट फार्मिंग को बढ़ावा देने के लिए, खाद्य प्रसंस्करण उद्योग मंत्रालय ने एक योजना "ग्रांट अंडर बैकवर्ड लिंकेज शुरू की है।
- अनुबंधित किसानों से खरीदी गई कच्चे माल के मूल्य का 10% (अधिकतम रु। 10 लाख/वर्ष) अनुदान 3 वर्ष तक खाद्य प्रसंस्करण इकाइयों को प्रदान किया जाता है।

## कॉन्ट्रैक्ट फार्मिंग में समस्याएं

सैद्धांतिक रूप से, किसान संविदागत समझौतों से लाभ उठा सकते हैं जो कम लेनदेन लागत, सुनिश्चित बाजार और जोखिमों का बेहतर आवंटन प्रदान करते हैं। दूसरी ओर, अनुबंधित फर्मों को अधिक सुनिश्चित आपूर्ति और गुणवत्ता और अन्य विशिष्टताओं पर उचित नियंत्रण का लाभ मिलता है। हालांकि, व्यवहार में, कृषि संबंधी ठेकेदारी में व्यावहारिक समस्याएं हैं जो किसानों और फर्मों दोनों के लिए नुकसान का कारण बन सकती हैं।

- चूंकि भारतीय कृषि में छोटे और सीमांत किसानों का वर्चस्व है। इस स्थिति में, किसान समूह बना सकते हैं जो पैमाना बना सकते हैं और किसानों की सौदेबाजी की स्थिति को भी बढ़ा सकते हैं जिससे उनका लाभ बढ़ सके। कॉन्ट्रैक्टिंग मॉडल या फार्म–फर्म लिंकेज के अन्य रूपों को विकसित करने में सफलता जो छोटे धारकों के लिए प्रभावी है, भारतीय कृषि के परिवर्तन में छोटे धारक की भागीदारी के लिए एक महत्वपूर्ण चुनौती होगी।
- बड़े पैमाने पर अनुबंधों के उल्लंघन का सामना करने पर कोई कानूनी सहारा नहीं।
- प्राकृतिक आपदाओं से बचाने के लिए एक व्यापक फसल बीमा योजना का अभाव।
- विभिन्न प्रकार की फसल की खेती से व्यावसायिक लाभ प्राप्त करने का प्रलोभन भूमि को स्थायी नुकसान पहुंचा सकता है।
- अनुबंध अक्सर प्रकृति में मौखिक या अनौपचारिक होते हैं, और यहां तक कि लिखित अनुबंध अक्सर भारत में कानूनी सुरक्षा प्रदान नहीं करते हैं जो अन्य देशों में देखे जा सकते हैं। संविदात्मक प्रावधानों की प्रवर्तनीयता की कमी के परिणामस्वरूप किसी भी पक्ष द्वारा अनुबंध का उल्लंघन हो सकता है। भारत में, ऐसे

उदाहरण सामने आए हैं जिनमें किसानों ने ठेका फर्मों को बेचने से इंकार कर दिया है जब बाजार की कीमतें अनुबंध की कीमत से अधिक हो गईं और कभी–कभी फर्मों ने अनुबंधित मात्रा में खरीद या अनुबंधित कीमतों का भुगतान बाजार की स्थितियों के कारण करने से इनकार कर दिया।

## कॉन्ट्रैक्ट फार्मिंग में जोखिम

### क) किसानों के लिए जोखिमः

- किसानों को उत्पादन और बाजार की विफलता दोनों के जोखिम का सामना करना पड़ता है, खासकर जब नई फसलों और किस्मों को अपनाते हैं।
- अनुबंधित कंपनी के अक्षम प्रबंधन और विपणन समस्याओं के कारण सभी अनुबंधित उत्पादन नहीं खरीदे जा सकते हैं।
- फसल उत्पादन अधिक होने के कारण खरीद को कम करने के लिए प्रायोजक गुणवत्ता मानकों में फेरबदल कर सकते हैं।
- प्रायोजक कंपनियां अपनी एकाधिकार स्थिति का फायदा उठा सकती हैं।
- प्रायोजक संगठन के कर्मचारी विशेष रूप से उत्पाद मात्रा के आवंटन में भ्रष्ट प्रथाओं को अपना सकते हैं।
- कम उत्पादन, खराब तकनीकी सलाह, बाजार की स्थितियों में महत्वपूर्ण बदलाव आदि के कारण किसान लंबे समय के लिए ऋणी हो सकते हैं।

### ख) प्रायोजकों/कंपनियों के लिए जोखिमः

- अनुबंधित किसानों को कार्यकाल की सुरक्षा के अभाव में भूमि संबंधी बाधाओं का सामना करना पड़ सकता है।
- सामाजिक और सांस्कृतिक अवरोध किसान की कंपनी की विशिष्टताओं के अनुसार उत्पादन करने की क्षमता को प्रभावित कर सकते हैं।
- खराब प्रबंधन और परामर्श की कमी के कारण किसानों का असंतोष पैदा हो सकता है।
- जब किसान को प्रतिद्वंद्वी कंपनियों द्वारा प्रोत्साहित किया जाता है या उसे खुले बाजार में उच्च मूल्य मिलता है, तो वह अनुबंध को तोड़ सकता है और वैकल्पिक बाजारों में उपज बेच सकता है।
- किसान अन्य फसलों के उत्पादन में इनपुट का उपयोग कर सकते हैं, जिसके लिए अनुबंधित फसल की उत्पादन क्षमता कम हो जाती है।

## अनुबंध खेती के लिए नीति समर्थन

कृषि विपणन को राज्यों के कृषि उपज विपणन विनियमन अधिनियमों द्वारा नियंत्रित किया जाता है। अनुबंध कृषि के अभ्यास को विनियमित करने और विकसित करने के लिए, सरकार सक्रिय रूप से राज्यों/केंद्र शासित प्रदेशों (संघ शासित प्रदेशों) को उनके कृषि विपणन कानूनों में सुधार करने के लिए बता रही है। यह देश में अनुबंध खेती को बढ़ावा देने के लिए अनुबंध कृषि प्रायोजकों के

पंजीकरण, उनके समझौतों की रिकॉर्डिंग और उचित विवाद निपटान तंत्र प्रदान करेगा। अब तक, 21 राज्य (आंध्र प्रदेश, अरुणाचल प्रदेश, असम, छत्तीसगढ़, गोवा, गुजरात, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, झारखंड, कर्नाटक, महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश, मिजोरम, नागालैंड, ओडिशा, पंजाब (अलग अधिनियम), राजस्थान, सिक्किम,) तेलंगाना, त्रिपुरा और उत्तराखंड) ने अनुबंध कृषि प्रदान करने के लिए अपने कृषि उपज विपणन विनियमन अधिनियमों में संशोधन किया है। उनमें, केवल 13 राज्यों (आंध्र प्रदेश, छत्तीसगढ़, गोवा, गुजरात, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, झारखंड, कर्नाटक, महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश, ओडिशा, राजस्थान और तेलंगाना) ने प्रावधान को लागू करने के लिए नियमों को अधिसूचित किया है।

## अनुबंध खेती में नाबार्ड की पहल

नाबार्ड ने अनुबंधित कृषि व्यवस्था (AEZ के बाहर और भीतर) के लिए एक विशेष पुनर्वित्त पैकेज विकसित किया, जिसका उद्देश्य किसानों के लिए वाणिज्यिक फसलों के उत्पादन में वृद्धि करना और विपणन मार्गों का निर्माण करना था। इस दिशा में नाबार्ड द्वारा की गई विभिन्न पहलें निम्नलिखित हैं:

- वित्तीय हस्तक्षेप
- AEZ में अनुबंध खेती के लिए किसानों के वित्तपोषण के लिए विशेष पुनर्वित्त पैकेज।
- सीबी, एससीबी, आरआरबी द्वारा किए गए संवितरण का 100% पुनर्वित्त और एससीएआरडीबी का चयन करें (शुद्ध एनपीए 5% से कम)।
- पुनर्भुगतान के लिए कार्यकाल की सुविधा (3 वर्ष)
- अनुबंध खेती के तहत फसलों के लिए उच्च स्तर के वित्त का निर्धारण।
- AEZ में अनुबंध खेती के लिए किसानों को वित्तपोषण के लिए पुनर्वित्त योजना का विस्तार
- स्वचालित पुनर्वित्त सुविधा के तहत अनुबंध खेती के लिए पुनर्वित्त योजना का विस्तार।

## निष्कर्ष

अनुबंध खेती व्यवसाय को कृषि उत्पादन पर नियंत्रण रखने में मदद करती है और उन्हें खाद्य सुरक्षा नियमों को पूरा करने की अनुमति देता है। अनुबंध खेती किसानों को उत्पादकता बढ़ाने और अधिक नकदी फसलों की ओर खेती में विविधता लाने के लिए कई कुशल तरीके प्रदान करती है। अनुबंध खेती के माध्यम से किसानों को नई तकनीक, इनपुट, प्रबंधन रणनीतियों और कई बाजारों से परिचित कराया जाता है।

भारत में कॉन्ट्रैक्ट फार्मिंग का भविष्य उज्ज्वल दिखता है। अमीर और समृद्ध लोग जो स्वास्थ्य और भोजन की गुणवत्ता को लेकर चिंतित हैं, वे चाहते हैं कि उनका भोजन विशेष मानदंडों को पूरा करे। इसलिए, अनुबंध खेती निश्चित रूप से भारत में एक आर्थिक रूप से व्यवहार्य मॉडल है और किसानों को आय का एक गारंटीकृत स्रोत प्रदान करने में सक्षम है।